कस्तूरी मृग

सी0 पी0 सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, नारायण नगर, पिथौरागढ़(उत्तराखण्ड)–262550
cpsingh26feb@gmail.com

कस्तूरी मृग

कस्तूरी मृग हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक दुर्लभ प्राणी है। यह समखुरयुक्त स्तनधारियों का समूह है। यह पशु मृगों के *अंग्युलेटा* कुल की *मॉस्कस मॉस्किफेरस* नामक प्रजाति का जुगाली करने वाला श्रृंगरहित चौपाया है। कस्तूरी मृग की प्रमुखत: चार प्रजातियाँ चीन, रूस, नेपाल एवं भारत के हिमालयी क्षेत्रों में पायी जाती है। यह उच्च हिमालयी क्षेत्रों में 2500 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में निवास करता है। कस्तूरी मृग को "हिमालयन मस्क डियर" के नाम से भी जाना जाता है। मृग प्रजाति का होने के बाद भी "कस्तूरी मृग" सामान्य मृग से अलग होता है। इसका रंग भूरा और उस पर काले मटमैले धब्बे होते हैं। 60 से 75 मिलीमीटर लम्बे दोनों दांत कैनाइन ऊपर से ठुड्डी के बाहर तक निकले रहते हैं। जिनका उपयोग यह अपनी सुरक्षा और जड़ी–बूटियों को खोदने में करता है। इसकी पिछली टांगे अगली टांगों से लम्बी होती हैं। खुर एवं नखों की बनावट इतनी छोटी, नुकीली एवं विशेष प्रकार की होती है कि बड़ी फुर्ती से भागते समय भी इसकी चारों टांगे चट्टानों के छोटे–छोटे किनारों पर टिक सकती है। खुर के नीचे खुरपोल होते हैं। इन्हीं खुरपालों की सहायता से यह बर्फ में भी आसानी से दौड़ सकते हैं। इनका प्रजनन काल प्राय: नवम्बर, दिसम्बर में होता है।

कस्तूरी मृग की घ्राणशक्ति एवं श्रवणशक्ति बहुत तेज होती है। अपने दोनों कानों को घुमाकर यह खतरे की टोह लेता रहता है। कस्तूरी मृग पहाड़ी जंगलों की चट्टानों के दर्रों, खोहों में निवास करता है। साधारणतया यह अपने निवास स्थान को कड़े शीतकाल में भी नहीं छोड़ता है। आराम से लेटने के लिए यह मिट्टी में गड्ढा बना लेता है। यह उन स्थानों पर रहना पसन्द करता है जहाँ मानवीय हस्तक्षेप की गुंजाइश नहीं होती। घास, पत्ती, जड़ी–बूटियां इसका आहार होता है। कस्तूरी मृग की एक प्रजाति उत्तराखण्ड के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पायी जाती है। इसका वैज्ञानिक नाम *मॉस्कस क्राइसोगैस्टर* है। यह "हिमालयन मस्क डियर" के नाम से जाना जाता है। कस्तूरी मृग अपनी नाभि में पाये जाने वाली कस्तूरी के लिए प्रसिद्ध है। कस्तूरी केवल नर मृग में ही पायी जाती है। जो इसके उदर के निचले भाग में जननांग के समीप एक ग्रन्थि से स्रावित होती है तथा उदरीय भाग के नीचे एक थैलीनुमा स्थान पर इकट्ठा होती है। एक कस्तूरी मृग में लगभग 30 से 45 ग्राम कस्तूरी पायी जाती है। कस्तूरी का प्रमुखत: उपयोग औषधि रूप में दमा, मिर्गी, एवं निमोनिया आदि की दवाइयों को बनाने में होता है। कस्तूरी से बनने वाला इत्र अपनी खुशबू के लिए प्रसिद्ध है।

दिनांक: 01.07.2013 को दैनिक जागरण समाचार पत्र के "आफत और राहत" खण्ड के अंतर्गत छपी खबर के अनुसार, पिथौरागढ़ के पास ही कुमाऊँ के धारचूला के जंगलों में 16.06.2013 को आई जल प्रलय से क्षति हुई है। उसके पास ही एस्कॉट अभयारण्य है जो कस्तूरी मृग को संरक्षित रखने के लिए सन् 1986 में बसाया गया था। यह देश का अकेला कस्तूरी मृग अभयारण्य है जहाँ लगभग 86 कस्तूरी मृग निवास करते हैं। जो देश–दुनिया और प्रकृति के लिए बेशकीमती हैं। वन अधिकारी आर0 बी0 एस0 रावत के अनुसार वर्तमान प्राकृतिक आपदा के उपरांत इन कस्तूरी मृगों के सुरक्षित होने की कोई भी जानकारी उनके पास उपलब्ध नहीं है। उनके अनुसार, गर्मी में कस्तूरी मृग और अधिक ऊंचे स्थानों पर चले जाते हैं उन्हें यह भी उम्मीद है कि प्रकृति को समझने की उनकी क्षमता और चपलता के कारण वह पर्याप्त समय पहले ही सुरक्षित स्थानों पर चले गये होंगे। केदारनाथ घाटी में जल प्रलय के लिए पहले बादल फटने को कारण बताया जा रहा था। उसके बाद केदारनाथ और गांधी सरोवर से ऊपर ग्लेशियर पिघलने का तर्क दिया जा रहा है, लेकिन पूरी प्रामाणिकता से अभी कोई अंतिम वैज्ञानिक कारण बताया जाना बाकी है। जो भी कारण हो, आपदा को पहले ही भांप लेने की जानवरों की मौलिक क्षमता ही अब इन कस्तूरी मृगों के जीवित बचने में सहयोगी है।

भारत सरकार द्वारा कस्तूरी मृग को दुर्लभ प्राणियों की श्रेणी में रखा गया है। इसके संरक्षण हेतु समय–समय पर अनेक अधिनियम बनाये गये हैं किन्तु शिकारियों द्वारा लगातार इसका दोहन किया जाता रहा है। जब तक स्थानीय जनता इसके महत्व को नहीं समझ पायेगी, तब तक कस्तूरी मृग की प्रजाति खतरे में ही रहेगी। आज आवश्यकता है इस दुर्लभ प्रजाति के मृग को बचाने एवं उसे संरक्षित रखने की।

संदर्भ

1. ओजा, जी0 एम0(1988) द हिमालयन मस्क डियर: इनकैश्ड फॉर एक्सटिंकशन, एनवायरनमेंटलिस्ट, विन्टर 1986, खण्ड 8, अंक 4, मु0 पृ0 301–304।
2. "काश! भाग निकले हों कस्तूरी मृग", आफत और राहत पृष्ठ, दैनिक जागरण समाचार पत्र, दिनांक: 01.07.2013